Dr. Nutisri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
P. G Sem-III (2024-2026)
CC-13 : Philosophy of Religion

'Nature and Scope of Philosophy of Religion'
(धर्म-दर्शन का स्वरूप और क्षेत्र)

धर्म दर्शन का स्वरूप-

सामान्यतः धर्म का अर्थ हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, ईसाई, यहूदी आदि के ऐतिहासिक धर्मों से समझा जाता है। परन्तु धर्म दर्शन इन धर्मों से भिन्न है। जितने भी ऐतिहासिक धर्म हैं उनके कुछ न कुछ आधार होते हैं, उनकी मान्यतायें होती हैं। धर्म दर्शन ऐतिहासिक धर्मों के व्यवहारों तथा आधारों का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। वस्तुतः धर्म दर्शन उस दार्शनिक क्रिया का नाम है जो धर्म का बौद्धिक या दार्शनिक विवेचन प्रस्तुत करता है।

धर्म दर्शन विश्व के विभिन्न धर्मों के इतिहास, मानवशास्त्र, समाजशास्त्र धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन, धर्म मनोविज्ञान आदि विषयों से धर्म से सम्बन्धित भिन्न-2 तथ्यों को एकत्र करता है। किन्तु इन विषयों से प्राप्त तथ्यों के संकलन मात्र से धर्म दर्शन का आविर्भाव नहीं हो जाता है। यह कहा गया है कि 'प्रत्यक्षों के बिना इन्द्रिय संवेदन अन्धे हैं तथा इन्द्रिय संवेदन के बिना प्रत्यय पंगु हैं', इसलिए धर्म दर्शन में धर्म से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों के संकलन के द्वारा धर्मों का मूल्यांकन होता है। धार्मिक तथ्यों के

विश्लेषण से सामान्य सिद्धान्त की खोज करना धर्म दर्शन का प्रमुख उद्देश्य है।

धर्म दर्शन मूल्यमीमांसा (Axiology) की एक शाखा है। मूल्यमीमांसा में मूल्यों का सामान्य अध्ययन होता है। धर्म दर्शन को मूल्यमीमांसा की शाखा इसलिए कहा जाता है क्योंकि धर्म का उद्देश्य आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति है। इस विचार का समर्थन ब्राइटमैन ने किया है। जबकि राइट ने धर्म को तत्वविज्ञान की शाखा माना है जिसका मुख्य उद्देश्य ईश्वर विचार है।

धर्म दर्शन ईश्वर विचार पर केन्द्रित है जिसमें ईश्वर विचार के अतिरिक्त अन्य प्रश्नों पर भी विचार होता है जैसे— ईश्वर क्या है? ईश्वर के अस्तित्व के क्या प्रमाण हैं? ईश्वर के गुण क्या है? ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है या व्यक्तित्वशून्य? मनुष्य और ईश्वर में क्या सम्बन्ध है? अशुभ का क्या स्वरूप है? अशुभ की समस्या का समाधान किस प्रकार सम्भव है? मनुष्य अमर है या मरणशील है। अमरत्व के क्या प्रमाण हैं? धार्मिक चेतना के कौन-2 तत्व हैं? क्या विभिन्न धर्मों के बीच एकता स्थापित की जा सकती है? धर्म

की उत्पत्ति के कौन-2 सिद्धान्त हैं? धार्मिक ज्ञान का स्वरूप क्या है? आदि।

इस विवेचन से या इन तथ्यों से प्रमाणित होता है कि धर्म का स्वरूप, क्रिया और मूल्य, एक आदर्श धर्म की विशेषताएं मानवीय आत्मा की समस्या, ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण, ईश्वर के गुण, धार्मिक चेतना के तत्व आदि धर्म दर्शन के प्रमुख तत्व हैं।

परिभाषा -

प्रो ब्राइटमैन के अनुसार "धर्म दर्शन धर्म की बौद्धिक व्याख्या की खोज का प्रयास है यह धर्म का सम्बन्ध अन्य अनुभूतियों से बतलाकर धार्मिक विश्वासों की सत्यता और धार्मिक मनोवृत्तियों एवं आधारों का मूल्य स्पष्ट करता है।"

जबकि जॉन केयर्ड का विचार है कि "धर्म दर्शन धर्म के दार्शनिक अध्ययन का प्रयास है यह तर्क की कसौटी पर धार्मिक मान्यताओं को परखता है तथा उसका समालोचनात्मक परीक्षण करता है।"

प्रो राइट का मन्तव्य है कि "धर्म दर्शन धर्म की सत्यता, व्यवहारों एवं विश्वासों की मूल विशेषताओं का सम्पूर्ण विश्व की दृष्टि से विवेचन करता है और धर्म का सम्बन्ध तत्व से निर्धारित करता है।"

जबकि थॉमस मैकफर्सन के अनुसार "धर्म दर्शन का कार्य धर्म के क्षेत्र में वस्तुओं को स्पष्टता प्रदान करना है।"

धर्म दर्शन का क्षेत्र –

कुछ धर्म दार्शनिक धर्म दर्शन के क्षेत्र को सीमित मानते हैं। वास्तव में धर्म से सम्बन्धित सभी अनुभूतियाँ, क्रियाएँ एवं विश्वास आदि धर्म दर्शन के क्षेत्र में आते हैं धर्म के स्वरूप, मूल्य एवं सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसका तथ्यात्मक ज्ञान आवश्यक है। किसी एक तथ्य धार्मिक तथ्य अथवा रूप को जान लेने से धर्म का वास्तविक स्वरूप ज्ञात नहीं हो सकता और न धार्मिक चेतना के प्राचीनतम रूप को जानने मात्र से हम धर्म के पूर्ण अर्थ को समझ सकते हैं। धर्म को मानव जीवन का एक सजीव तथ्य मानकर उसकी उत्पत्ति और विकास के ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक रूपों का परिचय प्राप्त करना धर्म दर्शन का प्रथम कार्य है। धार्मिक तथ्य के दो पक्ष होते हैं- एक तो आन्तरिक अनुभूति के विषय तथा दूसरा बाह्य निरीक्षण के विषय। जैसे – 'पूजा' एक आन्तरिक अनुभूति का विषय है और साथ ही बाह्य निरीक्षण का भी।

वस्तुत: धर्म दर्शन का कार्य दो प्रकार का है — (1) धर्म का तथ्यात्मक अध्ययन करना। (2) इन तथ्यों के परे जाकर वास्तविकता की दृष्टि से धार्मिक अनुभूति का मूल्यांकन करना। वास्तव में यह दोनों कार्य एक दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं। कान्ट के अनुसार केवल तथ्यात्मक अध्ययन स्वयं में निर्लक्ष्य एवं निरुद्देश्य है, और तथ्य विहीन शुद्ध बौद्धिक चिन्तन अपने आप में खोखला है जैसे दार्शनिक विवेचन के बिना इतिहास अथवा तथ्यात्मक विज्ञान अन्धे हैं उसी तरह इतिहास या तथ्यात्मक ज्ञान के बिना दर्शन भी पंगु है। धार्मिक तथ्यों का समुचित ज्ञान प्राप्त किये बिना ही यदि धर्म के स्वरूप मूल्य एवं सत्य आदि का निर्णय करने की चेष्टा की जाती है तो वह प्रत्यक्षानुभूत रहित विचार का उदाहरण होगा। उसी प्रकार धर्म के वास्तविक स्वरूप एवं अर्थ की उपेक्षा करके जो तथ्यात्मक अध्ययन किया जायगा वह 'विचार रहित प्रत्यक्ष' का उदाहरण होगा।

जहाँ तक धार्मिक चेतना एक इन्द्रियातीत व आध्यात्मिक आदर्शों की ओर संकेत करती है वहीं धर्म दर्शन धार्मिक ज्ञान के स्वरूप एवं उसकी प्रमाणिकता के बारे में भी विचार करता है। इस कार्य में वह विभिन्न सिद्धान्तों जैसे बुद्धिवाद, अनुभववाद

आदि का धार्मिक मान्यता के सन्दर्भ में विवेचन करता है। चूँकि धार्मिक मान्यताएँ तर्क पर आधारित नहीं होती वास्तव में एक आध्यात्मिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रतीक मूल्यों से सम्बन्धित हैं इन मूल्यों का ज्ञान उसे श्रद्धा द्वारा प्राप्त होता है। अतः श्रद्धा एवं ज्ञान के सम्बन्ध का विवेचन करना धर्म दर्शन का महत्वपूर्ण कार्य है।

इस तरह हम कह सकते हैं कि धर्म का तथ्यात्मक एवं तात्विक विवेचन धर्म दर्शन के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। चूँकि धर्म दर्शन का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है और इसके प्रतिपाद्य विषय के अन्तर्गत धर्मशास्त्र, धर्मविज्ञान, दर्शन एवं नीतिशास्त्र का क्षेत्र सम्मिलित है। इनमें से किसी एक की उपेक्षा करने से धर्म दर्शन का क्षेत्र संकुचित हो जाता है। इस तरह धर्म दर्शन समग्र धार्मिक अनुभूतियों का दार्शनिक विवेचन है।